कोरोना वायरस के दौरान अफ़वाहों और गलत सूचनाओं का काल क्रम

अनुष्का झा, ओसामा मंज़र

संक्षेप

यह लेख उन घटनाओं के कालक्रम को समझने का प्रयास है, जिन्होंने कोविड-19 के बारे में अफवाहें, फर्जी ख़बरें और गलत सूचना को जन्म दिया और जो अंततः समुदायों में फैलने में कामयाब रही. यह उन स्थितियों को समझने का भी प्रयास है जो अफ़वाहों के लिए उपजाऊ जमीन प्रदान करती हैं, और उन माध्यमों (सोशल मीडिया और आपस में बातचीत) की भूमिका को भी जो अफ़वाहों और फ़र्ज़ी ख़बरों को तेज़ी से फैलाने में सहायता करती हैं. अफवाहें और झूठी खबरें और उनपर विश्वास करना लोगों के व्यवहार का हिस्सा बनता जा रहा है, टेलीविजन समाचार चैनल अपने हित के लिये इन ख़बरों को ईंधन देने का कार्य करते हैं. सोशल मीडिया तमाम तरह की झूठी ख़बरों और दुष्प्रचारों की प्रयोगशाला है जहां इन्हें फैलाया जाता है. समाज के कुछ वर्ग इन अफ़वाहों और झूठी खबरों का उपभोक्ता बनने को तैयार रहते हैं, जो अक्सर हिंसा का रूप लेकर सामाजिक सद्भावना को खतरे में डालते हैं, जबकि अधिकारी इन असामाजिक तत्वों का मूकदर्शक भर रह जाते हैं.

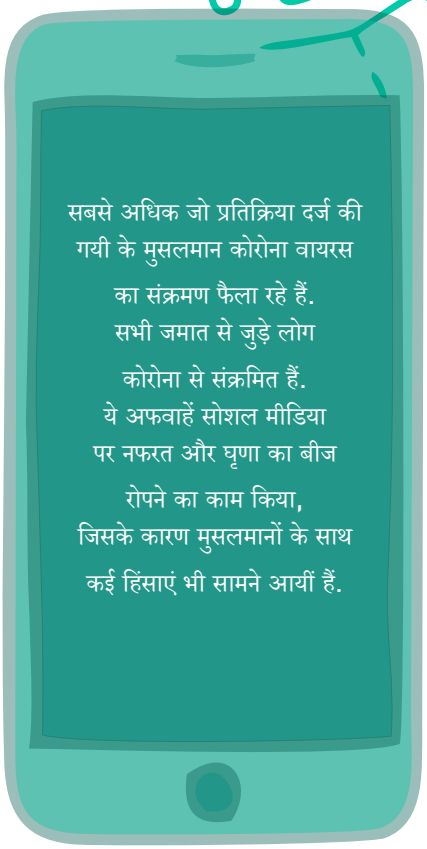

कोविड-19; झूठी ख़बर, ग़लत सूचना और अफ़वाह

16 अप्रैल 2020 को ही महाराष्ट्र के पालघर में भीड़ के द्वारा की गयी हत्या का मामला सामने आया था, जहाँ दो साधुओं समेत उसके चालक को बच्चा-चोर समझकर पुलिस के सामने में पीट-पीटकर मार डाला. पहले से उस क्षेत्र में बच्चा चोरी की अफ़वाह सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों से तैर रही थी. कहा जा रहा था कि बच्चा चोरी करके शरीर के अंग की तस्करी की जा रही है. उसी शक में 400 लोगों की भीड़ ने अंतिम संस्कार के लिए सूरत जा रहे साधुओं समेत उनके चालक की हत्या कर दी.

हम अपने देश में लिंचिंग के मामलों से परिचित हैं; यह शब्द हमारे दिमाग में अखलाक या पहलू खान की भयावह मौत को सामने लाकर खड़ा कर देता है. हमारा इतिहास ऐसी कई घटनाओं से भरा हुआ है. कभी महिलाओं को चुड़ैल समझ मारा गया, तो कभी दलितों को मूंछ रखने और घोड़ों की सवारी करने के लिए पीटा गया है. लोगों पे बच्चा चोरी का आरोप लगाकर उनकी हत्या कर दी गयी है, और गायों की कथित रूप से तस्करी के लिए मुसलमानों को दिन-दहाड़े मार डाला गया. एक बात जो इन घटनाओं में समान है, वह है अफवाह. ये अफवाहें अब अक्सर सोशल मीडिया पर शुरू होती हैं और आपस के मुंहा-फूसि के रूप में फैलती हैं जो के अक्सर भीड़ के द्वारा हत्या के रूप में सामने आती हैं.

कोविड-19 महामारी की चपेट में पूरी दुनिया आ चुकी है. भारत में भी संक्रमित लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है. इसके संक्रमण को रोकने के लिए लॉकडाउन पूरे देश में लगाया गया है. लॉकडाउन में भी अफ़वाहों और भीड़ के द्वारा हत्याएँ रुकने का नाम नहीं ले रहीं हैं. पालघर की घटना कई घटनाओं में से एक है जो लॉकडाउन के दौरान सामने आई. सोशल मीडिया पर शुरू होने वाली गलत सूचनाओं के चक्र और उसके कारण वास्तविक दुनिया में हो रही हिंसा को समझने के लिए, डिजिटल एम्पावरमेंट फ़ाउंडेशन ने देश भर के 15 राज्यों में अलग-अलग झूठी ख़बरों, गलत सूचना, अफ़वाह और मिथक का एक सर्वेक्षण किया.

ज़मीनी हक़ीक़त और विधि

देश भर के 15 राज्य, आंध्र प्रदेश, बिहार, दिल्ली, हरियाणा, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में कुल 378 लोगों का सर्वेक्षण किया गया. समुदायों में तैर रही विभिन्न अफ़वाहों, गलत सूचनाओं, फर्जी समाचारों और मिथकों को समझने के लिए सर्वेक्षण गुणात्मक था. विश्लेषण के उद्देश्य से अफ़वाहों, गलत सूचनाओं, फर्जी समाचारों और मिथकों की चार श्रेणियों में प्रतिक्रियाओं को रेखांकित किया गया तथा बाद में एक साथ रखा गया. रेखांकित करने की प्रक्रिया के दौरान पांच विषय उभरकर सामने आए. नकली चिकित्सीय सलाह, इस्लामोफोबिया, भोजन और मुर्गीपालन, अंधविश्वास और अंत में साजिश की कहानी. समाचार लेख के रूप में माध्यमिक डेटा का उपयोग सर्वेक्षण के विश्लेषण से उभरने वाले पैटर्न को प्रमाणित करने के लिए किया गया है.

कोरोना वायरस और झूठी ख़बरें

कैम्ब्रिज शब्दकोश झूठे समाचारों को झूठी कहानियों के रूप में परिभाषित करता है, जो समाचार प्रतीत होते हैं, इंटरनेट पर फैलते हैं या अन्य मीडिया का उपयोग करते हैं, आमतौर पर राजनीतिक विचारों को प्रभावित करने के लिए तैयार किया जाता है. 15 राज्यों के सर्वेक्षण में जो बात सबसे अधिक बार कही गयी वह यह है कि 500 रुपये जो महिलाओं के जन धन बैंक खातों में जमा किया गया था उसकी निकासी न करने पर सरकार इसे वापिस ले लेगी. मीडिया पर एक ऐसे ही झूठी खबर का प्रसार शुरू हुआ और मंगलौर में जहां 400 लोग सड़क पर निकल आए, जब उन्हें सोशल मीडिया पर यह संदेश मिला कि सरकार हर किसी को 2000 रुपये बांट रही है. इसी तरह की एक घटना झारखंड में सामने आई है, जिसमें जन धन बैंक खातों में सरकार द्वारा जमा किए गए 500 रुपये को निकालने के लिए कतार में खड़ी एक महिला की मौत हो गई. उत्तर भारतीय राज्यों में कई महिलाएं अफ़वाह फ़ैलने के बाद बैंकों के बाहर कतार में लग गईं कि अगर अप्रैल में जमा पैसा निकाला नहीं गया तो सरकार इसे वापस ले लेगी. आनन-फानन में पैसा निकालने के लिए बैंकों में महिलाओं की भारी भीड़ इकट्ठा हो गयी. लॉकडाउन के कारण लाखों परिवार आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं.

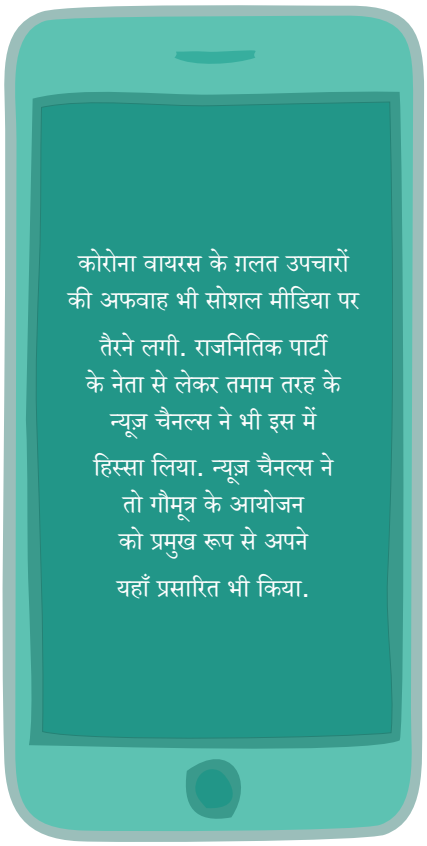

कोरोना वायरस और अफवाहों का तंत्र

नकली चिकित्सा सलाह: महामारी के समय नकली चिकित्सा सलाह बहुत तेजी से फैलती है और अफ़वाहों पर लोग विश्वास भी कर लेते हैं. अफ़वाहों को निराधार दावों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसे साबित करने के लिए सबूत नहीं होते. मांसाहारी भोजन, सब्जी और फलों में पाए जाने वाले वायरस और कुछ लोगों का तो यह भी मत था कि खाद्य अनाज के कारण यह बीमारी पैदा हुई है. कोविड-19 संक्रमण को ठीक करने के तरीके के बारे में भी अफवाहें थीं, जैसे शराब पीने से वायरस शरीर में प्रवेश नहीं होता है, भाप लेना और गर्म पानी पीने से गले में वायरस मर जाता है, लहसुन प्रतिरक्षा को बढ़ाएगा जिससे कोविड-19 से लड़ा जा सकता है और अंत में, 10 सेकंड के लिए सांस रोककर रखने और तुलसी का पत्ता और अदरक खाने से इस वायरस से संक्रमण नहीं होगा, के रूप प्रसारित किया जा रहा है. नकली चिकित्सा सलाह के बारे में इस तरह की अफवाहें सोशल मीडिया के साथ-साथ प्रमुख समाचार चैनलों पर व्यापक रूप से प्रसारित की गई हैं. सोशल मीडिया पर एक सन्देश वायरल हो रहा है जिसमें दावा किया गया है कि गुनगुने पानी में नींबू खाने और विटामिन सी का सेवन करने से कोरोना वायरस से लड़ने में मदद मिल सकती है.

चिकन खाने और गाय के मूत्र के सेवन के बारे में अफवाहें : चिकन खाने को कोरोना वायरस से जोड़कर अफवाह फैलायी गयी, इससे न केवल चिकन खानेवालों के मन में शंकाएं पैदा हुईं, बल्कि इसने पोल्ट्री उद्योग को भी बड़े स्तर पर प्रभावित किया. चिकन की कीमत 180 रुपये प्रति किलोग्राम से गिरकर 70-80 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई, क्योंकि चिकन खाने वाले उपभोक्ताओं में तेजी से कमी आई थी. मक्का और सोया उद्योग पर भी असर पड़ा क्योंकि पोल्ट्री उद्योग इन फसलों का सबसे बड़ा खरीदार रहा है. गोमूत्र और गाय के गोबर से कोविड-19 के ठीक होने की अफवाह सोशल मीडिया पर वायरल हो गयी, इसके बाद अखिल भारत हिंदू महासभा द्वारा गोमूत्र पिने का आयोजन किया गया, जहां दावा किया गया कि प्रतिभागियों ने गाय का मूत्र पीने के साथ-साथ वायरस को ठीक करने के लिए गाय के गोबर, मूत्र, दूध, दही और घी (पंचगव्य) का मिश्रण भी खाया. हालांकि यह कार्यक्रम व्यापक रूप से मुख्यधारा मीडिया में जगह पाने में सफल रहा, और बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचने में कामयाब रहा था, हो सकता है कि वास्तव में कई लोगों ने गोमूत्र पीया हो. गोमूत्र पीने के कारण स्वास्थ्य सम्बन्धी अन्य मुश्किलें आ सकती हैं, और पहले से ही कोरोना से जूझ रहे स्वास्थ्य सेवाओं पर अधिक दबाव डाल दिया हो.

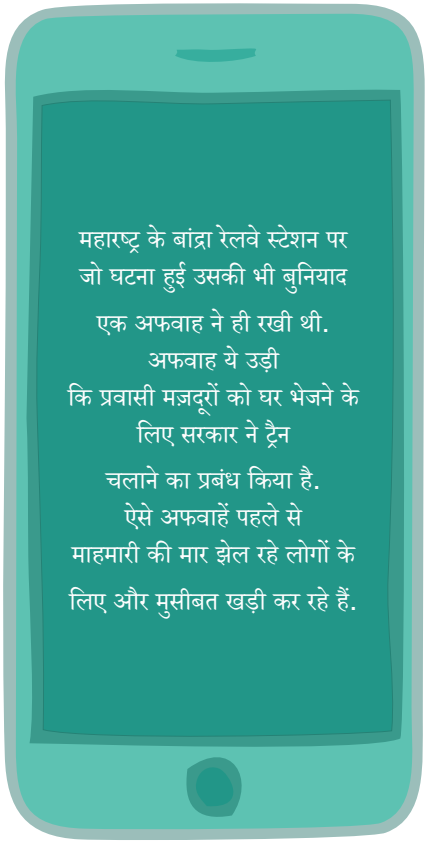

गलत सूचना और कोरोना

इस्लामोफोबिया: सबसे अधिक दर्ज की गई प्रतिक्रिया यह थी कि मुसलमान जान-बूझ कर कोरोना वायरस फैला रहे हैं. ऐसी प्रतिक्रियाएँ कि सभी तब्लीग़ी जमाती कोरोना वायरस से संक्रमित हैं, मुसलमान वायरस फैला रहे हैं, मुस्लिम विक्रेताओं और उनके उत्पादों का बहिष्कार किया जाना चाहिए' और लोगों ने उन मामलों के बारे में भी बताया है जो सोशल मीडिया पर सामने आए हैं जहां मुसलमान फलों और सब्जियों पर थूक कर वायरस फैला रहे हैं. वे वायरस से संक्रमित पैसे सड़कों पर फेंक रहे हैं. सर्वेक्षण में दर्ज की गई गलत सूचना का उन घटनाओं से जुड़ाव साफ़ तौर पर देखा जा सकता है, जो सोशल मीडिया पर घृणा और हिंसा का रूप धारण कर लेती है. घटनाओं का कालक्रम दिल्ली में तब्लीगी जमात के एक आयोजन के साथ शुरू हुआ जिसे कोरोना हॉटस्पॉट घोषित किया गया और सरकार आयोजकों पर वायरस फैलाने का इलज़ाम मढ़ दिया. सरकार के इस दावे ने मुसलमानों पर वायरस फैलाने के आरोप लगने लगे और इस तरह इसे मुस्लिम साजिश करार देने की नींव पड़ गयी.

इस बीमारी को इस्लाम धर्म से जोड़ते ही, इस्लाम से घृणा वाले सन्देश चारों तरफ तैरने लगे, जिसमें मुसलमानों को राहत खाद्य सामग्री पर थूकना, मुस्लिम व्यक्ति का संक्रमण वाले नोट का जानबूझ कर गिराना, और दूसरों के बीच जाकर कोरोनावायरस फैलाना शामिल था. इसके साथ ही #कोरोनाजिहाद जैसे हैशटैग ट्विटर पर ट्रेंड करने लगे, भाजपा नेताओं ने दावा किया कि तब्लीगी जमात के सदस्य कोरोना आतंकवाद को अंजाम दे रहे थे और यह इस्लामी साजिश का हिस्सा था. सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे झूठे वीडियो और गलत सूचनाओं की बाढ़ ने वास्तविक दुनिया में हिंसा का रूप ले लिया. पंजाब में, लगभग 80 मुसलमानों को उनके गाँव से बाहर निकाला गया. कर्नाटक में मुस्लिम पुरुषों को पीटा गया और वायरस फैलाने का आरोप भी लगाया गया. जबकि अन्य स्थानों पर मुस्लिम विक्रेताओं को कुछ इलाकों में प्रवेश करने की अनुमति भी नहीं दी गयी और उनका बहिष्कार भी किया गया. कारवाँ पत्रिका की एक स्टोरी में ऑल्ट न्यूज़ के संस्थापक प्रतीक सिन्हा कहते हैं कि समाज में बढ़ते ध्रुवीकरण के कारण गलत जानकारी आसानी से स्वीकार हो जाती है. उन्होंने आगे कहा कि मुख्यधारा की मीडिया में निजामुद्दीन घटना से पहले तक महामारी पर कोई धार्मिक रंग नहीं चढ़ा था.

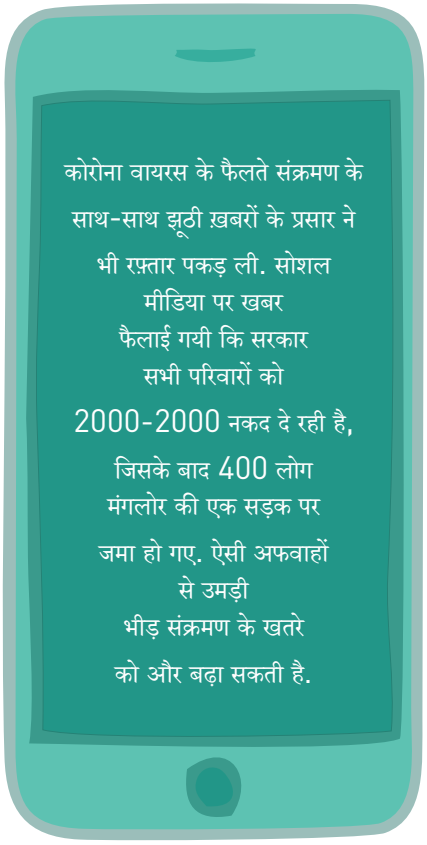

षडयंत्र की कहानियां : महामारी को इस्लामिक षड्यंत्र करार देने के साथ-साथ ऐसे वीडियो और संदेश भी प्रसारित हुए हैं जो दावा करते हैं कि कोरोना वायरस एक चीनी षड्यंत्र है.

सर्वेक्षण किए गए लोगों ने कहा कि वे ऐसी भी ख़बरें सुन रहे हैं कि चीनी प्रयोगशालाओं में वायरस के बनने के बाद चीन इसे विश्व युद्ध के लिए उपयोग करने की सोच रहा है. पुनः लोगों के इन दावों की जड़ों को सोशल मीडिया और व्हाट्सएप पर इनके प्रसार में देखा जा सकता है. सोशल मीडिया पर यह दावा किया जा रहा है कि कोरोनावायरस चीन द्वारा निर्मित किया गया है. यह जानकारी मनीष तिवारी ने एक लेख को ट्वीट करते हुए साझा किया था कि चीनी प्रयोगशालाओं में उत्पन्न किए जा रहे है वायरस. महामारी को चीनी षड्यंत्र कहने के कारण उत्तर-पूर्व भारत के लोगों पर नस्लवादी हमले हुए. ऐसी ख़बरें मिली हैं, जहां दिल्ली में रहने वाली मणिपुरी महिला पर एक आदमी ने हमला किया और उसे कोरोना कहा. ऐसी कई अन्य घटनाएँ हुई, जहां लोगों ने पूर्वोत्तर के लोगों पर चीनी और कोरोना वायरस को फैलाने का इलज़ाम लगाया. मकान मालिकों ने उत्तर पूर्व के लोगों को मकान खाली करने के लिए कहा. चीनी और मुसलमानों द्वारा कोरोना वायरस के प्रसार के बारे में गलत सूचना के परिणामस्वरूप हमारे अपने ही लोगों पर नस्लवादी और धर्म के आधार पर हुए हमलों में वृद्धि हुई है.

मिथक और कोरोना वायरस

अंधविश्वास : सर्वेक्षण में उन विभिन्न मिथकों को समझने की कोशिश की गई है जो कोरोना से संबंधित थे; ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी मिथ को एक व्यापक रूप से स्वीकृत लेकिन गलत धारणा या विचार के रूप में परिभाषित करती है. सबसे आम मिथक जो लोगों ने बताया कि 29 अप्रैल को पृथ्वी पर एक क्षुद्रग्रह गिरने वाला है, जिससे दुनिया का अंत हो जायेगा. उपवास करने से वायरस को रोकने में मदद मिलती है, शराब पीने से कोरोना नहीं होगा, चकला और बेलन उल्टा रखने से परिवार को कोरोना से बचाया जा सकता है, और गर्मी बढ़ने से वायरस का संक्रमण रुक जायेगा जैसे मिथक आम तौर पर पाए गए. पीएम मोदी द्वारा जनता कर्फ्यू के दौरान लोगों को मोमबत्ती और दीया जलाने का अनुरोध करने के बाद नासा के उपग्रह से दिखने वाले भारत से संबंधित एक वीडियो को सोशल मीडिया पर प्रसारित किया गया, जबकि दूसरा संदेश व्यापक रूप से यह प्रसारित किया जा रहा था कि थाली पीटने के कारण उत्पन्न आवाज़ से भारत में कोरोनो वायरस पीछे हट रहा है. इस जानकारी को नासा के SD13 वेव डिटेक्टर द्वारा पता लगाने के रूप में प्रसारित किया जा रहा था.

कोरोना वायरस से संबंधित मिथकों के प्रसार को देखते हुए, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने मिथ को तोड़ने पर जनता के लिए एक एडवाइजरी जारी की, उसमें कहा गया कि कोरोना वायरस मक्खी से नहीं फैलता है. शराब, मेथनॉल या इथेनॉल से वायरस नहीं मरता है, और वायरस का संक्रमण गर्म और आर्द्र जलवायु में भी हो सकता है. ऐसे समय में जब देश एक घातक बीमारी से जूझ रहा होता है, फर्जी समाचार और गलत सूचना और समस्या पैदा करते हैं और पहले से ही महामारी से जूझ रहे लोगों के दुखों को और बढ़ा देते हैं. चाहे महाराष्ट्र के बांद्रा में घटी घटना हो, जहां हजारों प्रवासी बांद्रा स्टेशन के पास इस अफ़वाह पर इकट्ठा हुए थे कि प्रवासियों को उनके घरों तक ले जाने वाली एक विशेष ट्रेन चलेगी, या पूरे जिले के सील होने की अफवाह सुनकर लोगों ने डर से आवश्यक वस्तुऐं खरीदने के लिए किराना दुकानों पर भीड़ लगा दी.ऐसे उदाहरण लोगों की लाचारी को सामने लाते हैं, जिससे उनपर महामारी का खतरा बढ़ जाता है . इन परिस्थितियों में, तथ्य-जांच करने वाली वेबसाइटों द्वारा किए गए प्रयासों को पहचानना महत्वपूर्ण है जो मिथकों और अफ़वाहों को तोड़ने के लिए अथक प्रयास कर रही हैं और झूठे समाचारों को रोकने का प्रयास कर रही हैं. इनमें मुख्य रूप से ऑल्ट न्यूज़, बूमलाइव, इंडिया टुडे फैक्ट चेक, विश्वास न्यूज़ और फैक्टली जैसी एजेंसियाँ शामिल हैं.

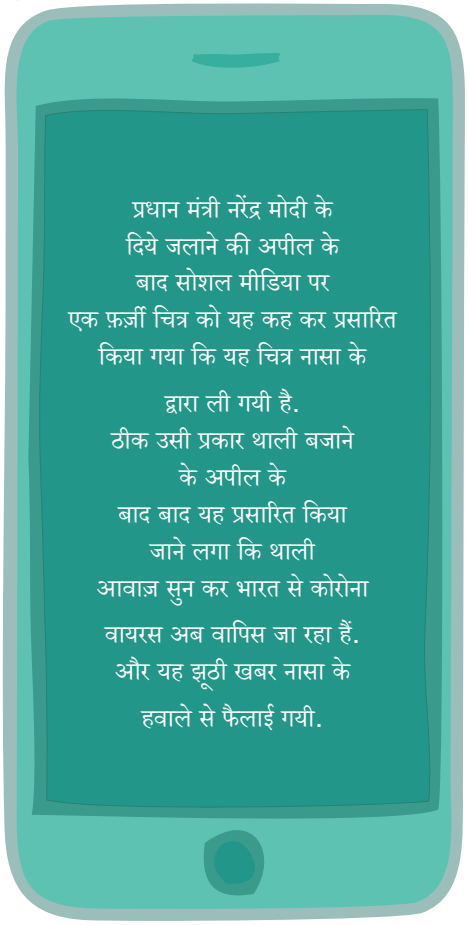

मिथक का टूटना

जनता कर्फ्यू के दौरान संक्रमण के चक्र को तोड़नेवाली अफवाहों का पर्दाफाश ऑल्ट न्यूज़ ने किया था. उसने एक लेख प्रकाशित किया था कि वायरस विभिन्न सतहों पर कितने समय तक रह सकता है. कोरोना वायरस फैलाने वाले तब्लीगियों के बारे में विभिन्न अफवाहें ऑल्ट न्यूज़ द्वारा कवर की गई थीं. लॉकडाउन के दौरान राहत सामग्री पर एक मुस्लिम के थूकने की एक ऐसी रिपोर्ट के तथ्यों की जांच की गई, बीमारी के लिए एक वैक्सीन के विकास के बारे में फर्जी खबर के साथ-साथ अन्य तथ्यों की जांच की गयी थी.

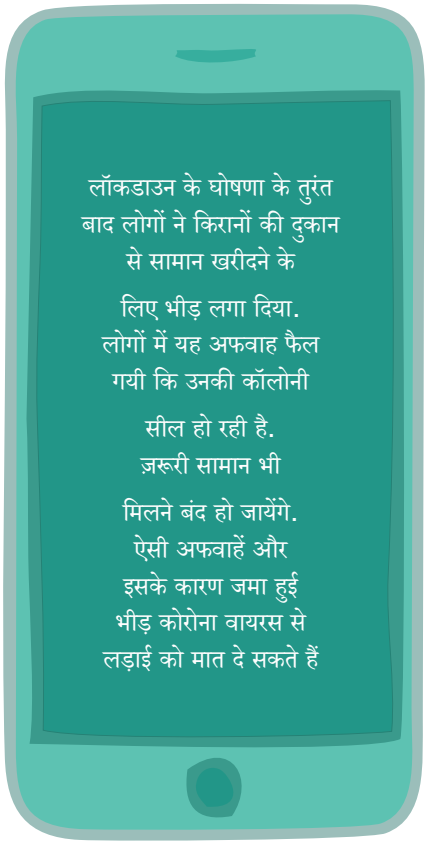

निष्कर्ष

ऊपर हमने जो वर्णन किया है उससे यह पता चलता है कि अफ़वाहों और गलत सूचनाओं ने इस पूरे प्रकरण में चिंगारी की भूमिका निभाई है, इससे पहले कि यह नियंत्रित हो ऐसी ग़लत जानकारियाँ पर्याप्त नुकसान पहुंचा चुकी होती हैं. सर्वेक्षण विश्लेषण से पता चला है कि ये अफवाहें और गलत जानकारियां न केवल सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फैलती हैं, बल्कि आपसी बातचीत और एक साधारण फोन कॉल और संदेशों के माध्यम से भी फैलती हैं. यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि ऐसे समय में जब लोग पहले से ही लॉकडाउन में होते हैं, ऐसी अफवाहें अक्सर लोगों को हताशा और लाचारी की तरफ धकेल देती हैं. उदाहरण के लिए, एक विशेष ट्रेन जो प्रवासियों को उनके गाँवों में वापस ले जाएगी, या सरकार द्वारा दिए गए पैसे की निकासी नहीं करने पर वह वापिस ले लिया जायेगा जैसी अफवाहें. लॉकडाउन के समय अफवाहें हताशा ही नहीं पैदा करती हैं, बल्कि कभी-कभी झूठी ख़बरें, अफवाहें और गलत सूचना, सामाजिक ताने-बाने को नष्ट करने का कारण बनती हैं और इससे जो नुकसान होता है उसकी भरपाई में समय लगता है, और अगर जख्म भर भी जाए, तो भी उसके निशान कभी नहीं जाते हैं.

अनुष्का झा डिजिटल एम्पावरमेंट फ़ाउंडेशन में अनुसंधान ऑफिसर हैं,
और ओसामा मंज़र डी ई एफ़ के संस्थापक और निदेशक हैं. संपर्क: def@defindia.net, osamam@gmail.com